वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मूल्य एवं अध्यात्म शिक्षा की आवश्यकता

सुरेश्वर मेहेर*

सांप्रतिक संसार मानवीय मूल्यों की कमी के कारण अत्यन्त गंभीर संकट की स्थिति से गति होने के स्पष्ट लक्षण परिलक्षित हो रहे हैं। पुनश्च मानव के पास अध्यात्म के विषय में सम्यक् अवबोध भी नहीं है जिससे वह अपना सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास साधित कर सके क्योंकि अध्यात्म ही मूल्यों को संवर्धित करने का एकमात्र सशक्त साधन है। प्राचीन काल की शिक्षा परंपरा में मूल्यों को समंवित कर आचार्य शिष्यों को शिक्षा प्रदान किया करते थे, परन्तु वर्तमान समय में मूल्यों के प्रति इतनी गंभीर अवहेलना प्रदर्शित की गई है कि उभरते छात्र व शिक्षक दोनों में चारित्रिक कलुषता स्पष्टतः दृष्टिगोचर हो रही है। एतत्सहित समाज में भी इसी नैतिक मूल्य भावजन्य चारित्रिक स्खलन के कारण अनेकानेक समस्याएँ दिन-प्रतिदिन दिखाई दे रही हैं। प्रस्तुत लेख के माध्यम से मूल्य व अध्यात्म शिक्षा के प्रति ध्यान आकर्षित कराने हेतु कुछ विचार प्रकट किये गए हैं जो अधुना समाज के लिए अत्यन्त प्रासंगिक व युक्तिसंगत प्रतीत हो रहे हैं तथा जिससे समाज को एक संतुलित व सुव्यवस्थित आयाम प्रदान करने की एक दृष्टि प्राप्त हो सके।

शिक्षा जगत् समाज एवं राष्ट्र के उत्कर्ष की आधार शिला है। स्वामी विवेकानंद के शब्दों में मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। शिक्षा का लक्ष्य ही है चरित्र निर्माण। आज तक के सभी शिक्षा आयोगों ने भी शिक्षा में आध्यात्मिकता को एवं मूल्यों को अनिवार्यता से स्वीकार किया है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा के लिए व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता को सबसे बड़ी शर्त माना था। कवींद्र रवींद्रनाथ और डॉ. राधाकृष्ण ने भी घोषणा की थी कि आध्यात्मिक पुनरुत्थान के बिना वैज्ञानिक उपलब्धियाँ विनाश का कारण बनेंगी। आज यही संघटित हो रहा है।

**शोध छात्र*, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली -67

सत्य, प्रेम तथा अच्छाई के मार्ग की बाधाओं को पार करने का सामर्थ्य एक मात्र विशुद्ध आध्यात्मिकता से संपंन मूल्यनिष्ठ जीवन ही प्रदान कर सकता है। आज विशुद्ध आध्यात्मिकता को समझने और आत्मसात करने की शक्ति, तैयारी और समय प्राय: दृष्टिगोचर नहीं हो रहा है, क्योंकि आज का मानव आत्मा और शरीर का संबंध और उसकी सार्थकता को नहीं समझ पा रहा है।

इसी कारण लक्ष्य विहिनता है, अज्ञान जनित भौतिक दौड़ की आँधी में अनीति, भ्रष्टाचार एवं नैतिक चारित्रिक पतन के चक्रवाह में वास्तविक जीवनधारा चुकती जा रही है। आज की शिक्षा जीवन के डाल पात से शरीर व शरीर के संबंधों तक सीमित है। वस्तुत: जीवन का असली राज शरीर से विपरीत जीवन जड़ों में है—शरीर से भिन्न आत्मा और उसकी अनंत शक्तियों में है। सत्य भीतर है, जीवन की क्षमताएँ, सुगंध तो भीतर है, बाहर तो मात्र प्रतिछाया है। प्रकृति के तत्वों में भी अपनी नैसर्गिक गरिमा-सौन्दर्य है— फूल में सुगंध, कोमलता, स्निग्धता, रंग और सौन्दर्य है। मानव का सौंदर्य खो गया है। कारण पाश्चात्य सभ्यता और दूषित वातावरण का प्रभाव है। आज की शिक्षा में प्रतियोगिता है, द्वेष है, भय है। अत: आज के मानव का व्यक्तित्व खंडित व्यक्तित्व है। उसमें उदारता, सहयोग, धैर्य और त्याग नहीं है। आज की शिक्षा एटम (अणु) की शिक्षा है, आतम (आत्मा) की नहीं। आज की शिक्षा में अहंकार का पोषण है, देह-अभिमान है। मान-शान, धन-सत्ता के पीछे दौड़ है जिसमें चारित्रिक गुणों का कोई स्थान नहीं है। इसके लिए उदारमना, आत्मस्थ व्यक्तिओं को चिंतन कर अविलम्ब समाधान ढूँढना है। जीवन की पूर्णता का अर्थ है—भौतिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की संपंनतापूर्ण समन्विति। समस्त मूल्यों का स्रोत मावनोपरि, अलौकिक सत्तारूप एक परमात्मा ही है। अत: उसे जानकर उससे अपना जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करने के लिए मानवीय गरीमा की प्रतिष्ठा और आत्मवाद की पुन: प्रतिष्ठा ही यथार्थ जीवन मूल्य है, जो आसन संकट से मानवता की रक्षा कर सकता है।

21वीं शताब्दी में स्वर्णिम भारत के उदय की आधार शीला ऐसी ही मूल्य शिक्षा है। आज की शिक्षा मानव मूल्यों को छोड़, सब कुछ दे रही है। मूल्य नहीं तो मानवता नहीं, चरित्र नहीं, मानव की आन और शान नहीं। कोई भी राष्ट्र जनबल और धनबल से महान नहीं बनता। उसके लिए चरित्रबल ही चाहिए। इसी के अभाव में आज व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पूर्ण रूपेण विकसित, सुखी, समृद्ध नहीं हो पा रहे हैं। व्यक्ति और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन मूल्यों और चरित्र की सुवास फैलानी है, समग्र राष्ट्र और विश्व में नई चेतना, नया विश्वास, नई आशा और नई उम्मीदों की लहलहाती फसलें तैयार करनी है, तो आज शिक्षा के क्षेत्रों को ही आगे आ कर आत्मवाद और परमात्मवाद से निष्पन्न जीवन मूल्यों की प्रयोगशालाएँ सर्वत्र खोलनी पड़ेंगीं। अगर आज मानव को झकझोर कर जगाया नहीं गया तो अहंकार, क्रोध, स्वार्थ, लिप्सा और मोहांधता पूरी मानवता का विनाश करने के लिए समक्ष है।

मूल्य की अवधारणा

(क) 'मूल्य' धर्म एवं दर्शन के उद्देश्य को प्रतिबिंबित करते हैं—जिनका लक्ष्य है लोगों को बेहतर जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन देना। मूल्य जीवन की सुंदरता एवं वरदान हैं। ये सभ्यता के आवश्यक तत्त्व तथा हमारे चरित्र के द्योतक हैं। हमारी श्रेष्ठ नैतिकता का निर्धारण मूल्यों के द्वारा ही होता है।

(ख) 'मूल्य' जीवन की अमूल्य निधि है जो हमें संपंन बनाते हैं। इनसे आत्मा-परमात्मा के निकट आने के योग्य बन जाती है और जीवन वास्तविक तथा सार्थक बन जाता है। मूल्य हमें निर्बधंन तथा स्वावलंबी बनाते हैं एवं बाहरी समस्याओं से हमारी रक्षा करते हैं।

(ग) 'मूल्य' मनुष्य के सिद्धाँत अथवा व्यवहार के स्तर हैं। जीवन में क्या महत्त्वपूर्ण है इस बारे में मनुष्य का निर्णय 'मूल्य' कहलाता है। मूल्य जीवन में स्वत: लागू किये गए नियम अथवा वे आचार संहिताएँ हैं जो जीवन यात्रा को स्वच्छ विवेक के साथ संपंन करने के लिए लागू किये जाते हैं। सभी श्रेष्ठ मूल्य (सत्यता, प्रेम, सहयोग, शांति, दया, विनम्रता इत्यादि) हमारे मन, विचारों एवं आध्यात्मिक स्वरूप में निहित होते हैं, न कि हमारे भौतिक स्वरूप में।

मूल्य एवं आध्यात्म

मूल्य एवं आध्यात्मिकता न सिर्फ मानव सभ्यता के केंद्र हैं बल्कि मनुष्यों द्वारा निर्मित अपने सभी वैध प्रतिष्ठानों तथा उनके नैतिक दर्शनों के भी केंद्र हैं। परंपरागत रूप से मूल्यों एवं आध्यात्मिकता को धर्म की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी माना जाता रहा है। मूल्य एवं आध्यात्मिकता को पारिवारिक इकाई का भी मूल तत्त्व माना जाता है। फिर भी विगत 2500 वर्षों से सभी महान एवं सामान्य सभ्यताएँ मनुष्य की कमियों, कमजोरियों के निवारण को लेकर चिंताग्रस्त रही हैं। कुछ महान विभूतियों की बात अगर छोड़ दें तो सामूहिक रूप से हम सभी लोग अपने मूल्यों एवं नैतिक सिद्धांतों का पालन नहीं कर पाए। यही कारण है कि लम्बे समय से धीरे-धीरे इन मूल्यों का ह्रास होता जा रहा है और आज भी हम मूल्य ह्रास के दौर से गुजर रहे हैं।

वर्तमान परिवेश में पारम्परिक शिक्षा विद्यार्थियों में विशिष्ट मानसिक दक्षताओं और ज्ञान का ही विकास करती है। इससे वे केवल अपनी जीविका कमाने के ही योग्य बनते हैं। वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा इतनी तीव्र हो गई है कि छात्रों के समक्ष उच्च शिक्षा के चयन की मजबूरी रहती है और इसके लिए वे अपने मूल्यों, अपनी संस्कृति, एकता, सत्यनिष्ठा एवं अन्य मानसिक दक्षताओं की बलि देते हैं। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन मूल्यों के द्वारा ही जीवन सुखी बनता है। इसके द्वारा ही एक विशिष्ट पुरुष अथवा स्त्री का निर्माण होता है जो सभ्य समाज के नवनिर्माण में गुणात्मक भूमिका का निर्वहन करने के योग्य बनते हैं।

जब कोई युवक अपने शिक्षण संस्थान से डिग्री प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर लेता है तब उसमें आर्थिक रूप से समृद्ध रोजगार प्राप्त करने की योग्यता का होना एक महत्त्वपूर्ण बात

है। परिवार में, समाज में व कार्यस्थल में सामाजिक चुनौतियों व परेशानियों का सामना करने के लिए तथा जीवन की अन्य आकाँक्षाओं की पूर्ति हेतु उसे अन्य अनेक बातों की भी आवश्यकता है। अगर व्यक्ति को अपने चरित्र के उत्थान, आंतरिक शक्तियों के विकास तथा निर्णय शक्ति के विकास का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है तो निश्चय ही वह सामाजिक व व्यवसायिक स्तर पर पिछड़ जाता है। जब तक व्यक्ति अपने जीवन के मूल्यों एवं अपनी प्राथमिकताओं का निर्धारण नहीं करता एवं अपने लिए कोई आचार संहिता नहीं बनाता, तब तक वह भविष्य में आने वाली परीक्षाओं से मुकाबला करने में सफल नहीं हो सकता।

स्वामी विवेकानंद ने एक बार शिक्षण की व्याख्या इस प्रकार प्रस्तुत की थी—

''शिक्षण मनुष्य के अंदर उपस्थित पूर्णता का प्रदर्शन है।''

'पूर्णता' शब्द का प्रयोग करके उन्होंने सर्व का ध्यान मनुष्य के अंदर छिपी दिव्यता की ओर आकर्षित किया था। उनकी व्याख्या के अनुसार —

''वही शिक्षण संस्थान सही अर्थों में शिक्षण संस्थान है जो मनुष्य का ध्यान प्रकृति द्वारा निर्मित विशाल संसार की अपेक्षा उसके अंतर्मन की ओर आकर्षित करता है।''

आध्यात्मिक विशेषज्ञता का विकास एवं जीवन में मूल्यों की धारणा का लक्ष्य सर्वोत्तम प्रयास कहा जा सकता है। इस प्रयास का लाभ जीवन पर्यन्त व्यक्ति के साथ-साथ रहता है। बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए समर्पित एक प्रेरक दर्शन एवं किसी वैश्विक मूल्य के प्रति निष्ठावान व्यक्तियों का एक छोटा-सा संगठन भी बेहतर दुनियाँ की स्थापना का मार्ग प्रशस्त कर सकने में सक्षम होता है।

मूल्य शिक्षा का लक्ष्य है, पारम्परिक शिक्षण का पूरक बन कर उससे आवश्यक सूचनाएँ एवं कौशल प्राप्त करना। इसके अभाव में व्यक्ति को भौतिक, भावानात्मक, सामाजिक व आध्यात्मिक जीवन में सफलता पाने की सम्भावनाएँ अत्यंत सीमित हो जाती है।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता के संदर्भ में निम्नलिखित कुछ महानुभावों के प्रमुख विचार—

(क) मूल्य शिक्षा की अवहेलना करना भयंकर आपदा को निमंत्रण देने जैसा है। अगर मूल्य शिक्षा के लिए अभी उचित कदम नहीं उठाये गए तो जल्दी ही सभ्य समाज जंगल के कानून द्वारा संचालित किये जाएँगे। *(ब्रह्माकुमार जगदीश चंद्र हसीजा)*

(ख) आज के इस कौतूक भरे कंप्यूटर संसार में रहते हुए भी जीवन को उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक बनाने के लिए हमें आध्यात्मिक मूल्यों को फिर से धारण करना अति आवश्यक है। *(डॉ. के. चिदानंद गौड़ा)*

(ग) संपूर्ण संसार मूल्यों के ह्रास के भयंकर दौर से गुजर रहा है। घातक हथियारों, नशीले पदार्थों एवं देह व्यापार जैसे तीन प्रकार के व्यापारों ने समाज की गति को रोक लिया है। यह एक अत्यंत ही हानिकारक स्थिति है। मूल्य ह्रास की इस स्थिति से निकलने के लिए वर्तमान पीढ़ी को आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा देना अत्यंत आवश्यक है। *(मोहम्मद बशीर)*

विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं समितियों के निष्कर्ष

आज पूरा विश्व मूल्यों के भयंकर संकट के दौर से गुजर रहा है। आजादी के बाद से ही सरकार ने कई प्रकार के आयोगों एवं समितियों का गठन शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए किया। इन आयोगों एवं समितियों ने सत्य, शांति, प्रेम, न्याय एवं सहयोग जैसे वैश्विक मूल्यों एवं मानवीय मूल्यों को जीवन में धारण करने की बात कही है। यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र का शैक्षणिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन) ने जैक्यूस डेलोर्स की अध्यक्षता में अंतर्राष्ट्रीय आयोग का गठन किया। इस आयोग में पूरी दुनियाँ के शिक्षाशास्त्रियों को शामिल किया।

डेलोर्स की रिपोर्ट ने शिक्षा के 4 स्तम्भों की जानकारी दी—

(क) जानने के लिए शिक्षा

(ख) करने के लिए शिक्षा

(ग) बनने के लिए शिक्षा

(घ) एक साथ जीने के लिए शिक्षा

प्रथम के लिए शैक्षणिक योग्यता आवश्यक है। द्वितीय के लिए कार्यकुशलता आवश्यक है। जबकि तृतीय एवं चतुर्थ के लिए मूल्यों की अवधारणा आवश्यक है।

निम्नोक्त कुछ मुख्य कारण हैं जिनके लिए मूल्य शिक्षा की महति आवश्यकता है—

- भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्य,
- मूल्यविहीन विज्ञान एवं तकनीकि,
- हिंसा का बढ़ता प्रयोग,
- मादक द्रव्यों का बढ़ता हुआ प्रयोग,
- प्रत्येक शैक्षिक स्तर पर मूल्य शिक्षा का अभाव,
- लोक कथाओं द्वारा अपमूल्यन।

मूल्य शिक्षा का प्रभाव

1. *व्यक्तिगत प्रभाव*

मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा व्यक्तित्व को निखारती है। आंतरिक सशक्तिकरण कर इच्छाओं को कम करके उपभोक्तावाद की आँधी को समाप्त करती है। परिणामस्वरूप मूल्यनिष्ठ जीवनशैली की सरलता के कारण वह अत्यधिक खर्च करने से बच जाता है और अनुचित एवं बेईमानी से अपने आय के स्रोतों को बढ़ाने का प्रलोभन भी उसके मन में घर नहीं कर पाता। एक ईमानदारी व्यक्ति अंदर और बाहर एक समान ही होता है जिससे उसका एक उज्ज्वल चरित्र समाज में प्रतिष्ठित होता है एवं वह सभी का प्रिय पात्र बनता है।

2. सामाजिक प्रभाव

संचार के विभिन्न चैनलों द्वारा प्रसारित मूल्य शिक्षा यह दावा करती है कि उसने हर उम्र के लोगों एवं समाज के प्रत्येक समूहों को इस शिक्षा के माध्यम से इतना जागरूक एवं कुशल बना दिया है कि वे गलत कार्यों में संलग्न होने के किसी भी दबाव का मुकाबला कर सकते हैं। जब हर स्तर की शिक्षा में मूल्य शिक्षा का समावेश कर दिया जाता है और स्त्री एवं पुरुष को समान रूप से दिया जाता है तो लोगों को यह सभ्य नागरिक जीवन जीने के योग्य बना देती है, तब मूल्यों को जीवन में धारण करने वाले व्यक्ति सामाजिक जीवन व्यवस्था में अधिक गहराई तक प्रविष्ट कुप्रवृत्तियों, भ्रष्टाचार, घूसखोरी तथा

भाई–भतिजावाद जैसी बुराईयों, महिलाओं, बच्चों एवं पिछड़ी जाति के लोगों के साथ होने वाले भेदभावों को समाप्त करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। ऐसी श्रेष्ठ वृत्तियों के कारण समाज के सर्वाधिक विपन्न लोगों के भी आत्मसम्मान जागृत हो जायेंगे और वे अपनी प्रतिष्ठा तथा स्वमान की रक्षा कर सकेंगे।

ऐसी स्थिति में लोग मूल्यों के प्रति स्वाभाविक रूप से संवेदनशील बनते हैं तथा वे सहज ढंग से पर्यावरण की रक्षा के लिए तत्पर भी होते हैं। मूल्य शिक्षा मनुष्य के अंदर मूल्यों के अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित करती है। मूल्य शिक्षा लोगों को आन्तरिक रूप से इतनी शक्तिशाली बना देती है कि वे मन, वचन एवं कर्म से लालच, स्वार्थ एवं हिंसा की भावना का प्रतिकार करने में समर्थ हो जाते हैं। मूल्य शिक्षा के बेहतर प्रसारण की व्यवस्था द्वारा लोगों को जुआ, विभिन्न व्यसनों एवं ड्रग्स के प्रयोग के खतरों की जानकारी दी जा सकती है। मानवीय, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से संपन्न समाज प्रबुद्ध एवं संवेदनशील लोगों को भी मूल्य की शिक्षा द्वारा प्रेरित किया जा सकता है।

शिक्षा में मूल्य

मूल्यों के बिना कोई भी शैक्षणिक संस्थान अपना अस्तित्व कायम नहीं रख सकता है। हर उम्र के विद्यार्थियों को मूल्यों की शिक्षा उनके विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल सामग्रियों, विद्यालय की नीतियों एवं कार्यक्रमों द्वारा प्रदान करना आवश्यक है। मूल्य रहित शिक्षा जैसी कोई चीज नहीं होती है। विद्यालय प्रतिदिन मूल्यों की शिक्षा देते हैं परंतु प्रश्न है कि किन मूल्यों की? भारत में शिक्षा भिन्न–भिन्न काल में अनेक धार्मिक एवं राजनीतिक सत्ताओं के प्रभाव में रही है। ये प्रभावशाली प्राधिकार हैं—हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, जैन तथा ईसाई धर्म, अँग्रेज़ी उपनिवेशवाद, बुद्धिजीवी एवं इतिहासकार आदि। इन सभी ने अपने आदर्शों एवं मूल्यों को स्थापित करने का प्रयत्न करने का प्रयत्न किया। इन सभी का उद्देश्य था कि वे अपने मूल्यों को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ। इन विभिन्न प्रभावशाली सत्ताओं के कारण ही आज भारतवर्ष बहु–संस्कृति प्रधान समाज बन गया है।

21वीं सदी के प्रारम्भ में आज दुनियाँ में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रभावशाली सत्ताएँ हैं। सूचना तकनीकी में विशिष्ट ज्ञान के आधार पर भारत वर्ष आज दुनियाँ के नक्शे पर अपनी अलग पहचान बनाने के पथ पर निरंतर अग्रसर है। भारतवर्ष के विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों के साइबर अभियांत्रिकी के कुशाग्र एवं प्रतिभाशाली अभियन्ता भारत को एक नई पहचान दे रहें हैं। तथापि भौतिकता आधारित इस तकनीकी प्रगति को ही मानवीय तथा वैश्विक मूल्यों के पतन का जिम्मेवार भी माना जा रहा है।

अगर तकनीकी एवं मूल्यों के विकास के बीच कोई संबंध स्थापित होता तो हम पाते कि इस देश में मूल्यों की धारणा के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण विकास हो रहा है, किन्तु ऐसी स्थिति नहीं है। भौतिकवाद के उदय के साथ–साथ हम देख रहे हैं कि दुश्चिंताओं एवं असंतोष में वृद्धि खुशियों की अपेक्षा अत्यन्त तीव्र गति से हो रही है। अहंकार, क्रोध, हिंसा तथा पतनोंमुख शिक्षा का तेजी से प्रसार हो रहा है। मानव के सर्वांगीण

विकास की कीमत पर आज की शिक्षा लोगों को आपसी प्रतिस्पर्धा के लिए ही प्रेरित कर रही है।

शिक्षा का पहला कर्तव्य है *ज्ञान की खोज एवं उसका प्रसार करना।* परन्तु शिक्षा ऐसी हो जो विधि-विधान की जानकारी प्राप्त कराए तथा युवाओं के संवाद संप्रेषण की क्षमता का इस प्रकार विकास करे कि वे तेजी से बदल रहे इस प्रतियोगितावादी एवं परिवर्तनशील दुनियाँ के लायक स्वयं को बना सकें। शिक्षा जीवन की एक अनिवार्य संपत्ति है क्योंकि यह शांति, स्वतंत्रता व न्याय दिलाती है। यह गरीबी, अज्ञानता, अत्याचार, युद्ध एवं शोषण को समाप्त करने वाली शक्तियों में प्रमुख शक्ति है।

शिक्षा का लक्ष्य

(क) मावन जीवन में परिवर्तन लाना।

(ख) सर्वांगीण विकास हो (शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, भावात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक) केवल 3-R (Reading, Writing and Recitation) की शिक्षा नहीं।

मानसिक व्यक्तित्व विकास

नकारात्मक संकल्पों को सकारात्मक संकल्पों में, व्यर्थ संकल्पों को समर्थ संकल्पों में परिवर्तन करना ही मानसिक व्यक्तित्व विकास है। आजकल की शिक्षा प्रणाली में स्मरण शक्तिवर्धन को ही मानसिक व्यक्तित्व विकास समझा जाता है। मानसिक व्यक्तित्व विकास के लिए वास्तव में एकाग्रता, मौन, ध्यान व योग की आवश्यकता होती है। मन को प्रशांत करना अनिवार्य है। मानसिक व्यक्तित्व विकास होने से व्यक्ति संतुष्ट रहेगा, प्रतिकूल परिस्थितियों का, विरोधों का समर्थ रीति से सामना करेगा, नवीनता को अपनाएगा।

भावनात्मक व्यक्तित्व विकास

जो विचार इंद्रियों के द्वारा व्यक्त करते हैं, उसे भावना कहते हैं। उदाहरण—खुशी, शांति, आनंद, क्रोध, द्वेष इत्यादि। हम भावनाओं को तौल नहीं सकते हैं, केवल महसूस कर सकते हैं। आज मानवीय संबंधों में विश्वास, सहयोग, सद्भावना, स्नेह नहीं रहा है। व्यक्ति स्व-उन्नति को भूलता जा रहा है। कमजोरियों का निर्मूलन करने के लिए कमजोरियों की महसूसता, परिवर्तन की विधि चाहिए। तब सहज ही हमारा दुर्व्यवहार सद्व्यवहार में बदल जाएगा। विश्व में भाईचारा और एकता स्थापित होगी।

बौद्धिक व्यक्तित्व विकास

वर्तमान शिक्षा से व्यक्ति में नकारात्मकता और विनाशकारी शक्तियाँ आ रही हैं। मानवकुल का नाश करने के लिए आण्विक अस्त्रों-शस्त्रों के निर्माण में व्यक्ति व्यस्त है। लेकिन इतिहास साक्षी है कि जब-जब मानव ने शस्त्रों का सहारा लिया हौ, तब-तब रक्तरंजित क्रांति हुई है। फिर अणु अस्त्रों का निर्माण ही क्यों? व्यक्ति बुद्धिमान होते हुए भी स्वयं विनाश की तैयारियाँ कर रहा है। वास्तव में बुद्धि का विकास सकारात्मक होना चाहिए तथा सृजनात्मक, श्रेष्ठ समाज के लिए नवनिर्माण में होना चाहिए।

आध्यात्मिक व्यक्तित्व विकास

अध्यात्म अर्थात् आत्मा का अध्ययन तथा आत्मा की अनुभूति करना। अपने आध्यात्मिक अस्तित्व

की पहचान आवश्यक है। जिससे आत्मशक्ति, आत्मसंतुलन, आत्मसंयम, आत्मबल प्राप्त होता है। मूल्यों के ह्रास के कारण शांति, आनंद, प्रेम बाहर ढूँढ़े जा रहे हैं। आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकासित स्वरूप ही मूल्यनिष्ठ जीवन है। इसलिए महान दार्शनिक सॉक्रेटिस ने कहा है- "To know thyself is education".

वर्तमान परिदृश्य

- जीवन केवल रोटी, कपड़ा, मकान और वैभवों के लिए हो गया है। जानकारी अथवा सूचना ही शिक्षा अथवा ज्ञान हो गई है। विवेक सूचना रूपी शिक्षा में ही लिप्त हो गया है। *तमसो मा ज्योतिर्गमय*। अंधकार का विनाश और ज्ञान का विस्तार। अहंकार, क्रोध, मोह, काम, कामनाएँ आदि विकृतियाँ ही अज्ञान रूप हैं। फलस्वरूप अशांति, दु:ख, तनाव का प्रादुर्भाव हो रहा है।
- सा विद्या या विमुक्तये। जो बंधन से मुक्ति दिलाती है वही विद्या है। अज्ञान से ज्ञान की ओर हमें ले चलो। विकृति से संस्कृति की ओर हमारी यात्रा हो। रोग, शोक, दु:ख, अशांति के बंधन से हमें मुक्त करे। जो हमें प्रज्ञा दे, वह विद्या है। अंदर की आँखे खोलो। *ज्ञानं तृतीय नेत्रम्*। जिसमें प्रज्ञा है वह स्थितप्रज्ञ है।
- श्रीमद्भगवद्गीता में स्तिथप्रज्ञ के लक्षण बताए हैं—जो सुख-दु:ख, हर्ष-शोक, जय-पराजय इत्यादि द्वंद्वों में हर परिस्थिति में समान रूप से (स्थिर)—सम्यक् भाव से रहता है उसकी प्रज्ञा स्थिर है अत: गीता शिक्षा का ग्रंथ है, महान ग्रंथ है। जीवन की राहों में चलते-चलते जो परेशानियाँ आती हैं, मुसीबत के पहाड़ आते हैं, काँटों के जंगल आते हैं, व्यथा वेदना-निराशा-संताप के तूफान आते हैं—कोई सहारा, कोई आशा की किरण न मिले, ऐसी परिस्थिति में से जो पार कराये वही विद्या है।
- हम परेशान क्यों हैं? किन बातों से हैं? हमारी नकारात्मक श्रृखलाओं से (Illusion, Delusion and Confusion) भ्रांतियाँ, मिथ्या मान्यताएँ और उलझी हुई बुद्धि के कारण। हमारी अनन्त इच्छाओं और अपेक्षाओं के कारण। हम स्पर्धा की धुन में उलझ गए हैं अत: तनावयुक्त (टेंशन) में रहते हैं। हम सदा एक दूसरे को देखते हैं, तुलना करते हैं। अत: ईर्ष्या, निंदा, घृणा, विरोध, वैमनस्य, संघर्ष में जल्दी फँस जाते हैं। हमारी वृत्तियाँ हमारे वश न होने के कारण अहंकार, क्रोध, मोह, काम, कामनाओं, वहम् और पूर्वाग्रहों में हमारी बुद्धि बंद हो जाती है इन सबसे मुक्ति चाहिए—यह कार्य विद्या का है। सा विद्या या विमुक्तये, विद्या ददाति विनयम्। परिपक्वता, ज्ञान या शिक्षा से आती है। जैसे पका हुआ फल मधुर होता है वैसे व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास या परिपक्वता अर्थात् प्रसंनता, मधुरता, सौहाद्रता, सहनशीलता, सेवा, परोपकारिता इत्यादि मूल्यों का जीवन व्यवहार में आना।

वर्तमान काल की मूल्यसंपन्न जीवन प्रणाली

प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली थी। गुरु का स्थान माता-पिता और राजा से भी ऊचाँ था। उस

प्रणाली से व्यक्ति और समग्र समाज की जीवन व्यवस्था में मूल्यों का आधिपत्य था। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, नीतिमत्ता, शांति, परस्पर स्नेह और सेवाभाव जीवन के केंद्र स्थान में थे। राजा-प्रजा-साहूकार सबके जीवन में संतोष रूपी धन था। विरोध-वैमनस्य, अशांति, परिग्रह, व्यथा-वेदना, रोग-शोक का आधिपत्य नहीं था। चारित्रिक धन था। शांति, प्रेम, आनंद, संवादिता, समृद्धि थी। संतुष्टता लक्ष्मी के समान थी। अभी जीवन का केंद्र बिंदु पैसा बन गया है।

गुरु राजविद्या, व्यवहार विद्या, ज्योतिष विद्या, शस्त्र विद्या के सिखाने से पूर्व ध्यान, प्रार्थना, मौन, त्याग, तपस्या, सेवा, समानता इत्यादि मूल्यों की शिक्षा देते थे। राजकुमार और सामान्य ब्राह्मण बालक (कृष्ण-सुदामा) की परवरिश समानता से होती थी। गुरु के आगमन पर राजा उठकर आतिथ्यभाव से नमन करता था। उदाहरण—वशिष्ठ, विश्वामित्र, व्यास आदि। वे अध्यात्म विद्या द्वारा जीवन मूल्यों का आत्मसात् कराते थे। उदाहरण—सत्यं वद, धर्मं चर। रामायण-महाभारत में मूल्य संपन्न जीवन का वर्णन प्राप्त होता है। उस समय के समग्र में मूल्यों की विजय और मूल्यहीन व्यक्तियों का नाश बताया गया है।

- राजा विक्रमादित्य की उदारता, प्रजावत्सलता, सेवाभाव।
- चाणक्य द्वारा राज्ससत्ता की स्थापना।
- केवल एक ही कलिंग देश पर विजय पाने के बाद राजा अशोक का पश्चाताप और बौद्ध धर्म स्वीकार करना।
- विवेकानंद की प्रतिभा स्वामी रामकृष्ण की छाया में आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा प्रस्फुटित हुई।
- महर्षि अरविंद, महात्मा गाँधी, रवींद्रनाथ टैगोर आदि महान विभूतियों ने मूल्य शिक्षा का स्रोत आध्यात्मिकता को ही बताया है। सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) और महावीर दोनों राजकुमारों द्वारा लोक कल्याणार्थ गृह त्याग। त्याग-तपस्या-करुणा-सेवा के उत्कृष्ट मूल्यों का सृजन आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा। ध्यान, तप, मौन, चिंतन, सेवा, सुश्रुषा, क्षमा तथा करुणामय जीवन द्वारा।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली

- वर्तमान शिक्षा प्रणाली विदेशी शासकों की देन है। मैकॉले ने अँग्रेज़ी शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए, क्लर्क पैदा करने की शिक्षा पद्धति अपनाई, जिसमें परिवर्तन लाने के अथक प्रयास किए जा रहें हैं।
- आजादी के बाद राधाकृष्णन् कमीशन, कोठारी कमीशन शिक्षानीति इत्यादि द्वारा नैतिक शिक्षा और योग के लिए अनेक सुझाव दिए गयें हैं। करोड़ों रुपयों का खर्च होने के बावजूद भी शिक्षा शिक्षा प्रणाली से चरित्रवान, आत्मविश्वास सभर, मूल्यवान व्यक्तित्व वाली युवा पीढ़ी नहीं उभर पाई है।
- एक यूनिवर्सिटी से प्रतिवर्ष 10 हजार, 15 हजार या 20 हजार स्नातक-अनुस्नातक इंजीनियर्स, डॉक्टर्स, लॉयर्स, टीचर्स, प्रोफ़ेसर्स या प्रोफ़ेशनल्स जैसे— बी.बी.ए., एम.बी.ए., आई.आई.एम. इत्यादि डिग्रीधारक पैदा होकर निकलते हैं, परंतु इनके व्यक्तित्व के अन्य पहलूओं जैसे दूसरों की कमाई का सरोकार, जैंडर सरोकार इत्यादि के जाँचे जाने की सुदृढ़ व्यवस्था नहीं है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली का

डिग्री और नौकरी से संबंध जुड़ गया है। जीवन के मूल्यों से कोई संबंध नहीं रहा है।

- हमारी संस्कृति के सत्व को आज की शिक्षा ने भूला दिया है। सनातन धर्म, वैदिक संस्कृति और अध्यात्म विद्या, दर्शनशास्त्र, आयुर्वेद, खगोल विद्या, भू-परीक्षण विद्या, शिल्प-स्थापत्य, संगीत-नृत्य आदि कलाओं को और शुद्ध, स्नेहयुक्त, सुसंवादी पारिवारिक एवं समाज व्यवस्था आदि प्राचीन विरासत से हमने मुँह मोड़ लिया है और उसकी जगह पाश्चात्य भोग-विलासमय, मर्यादाहीन संस्कृति को अपना बना लिया है। फिल्म, टी.वी. और साहित्य में पाश्चात्य भोग-प्रधान संस्कृति से पूर्ण दृश्यों का आकंठपान करने में नई पीढ़ी डूबी ही है।
- अनास्था, आत्मगौरवहीनता, अमर्यादा और भौतिक वासनाओं में डूबी युवा पीढ़ी गुमराह है। इसे सही दिशा दिखाने का अधिकार एक मात्र शिक्षा क्षेत्र को ही है। शिक्षक मार्गदर्शक हो सकता है। परिवर्तन की लहर का ध्वज बन सकता है। हमारी प्राचीन गौरवपूर्ण जीवन प्रणाली की ओर दृष्टिपात कराकर सोई हुई चेतनाओं को जगा सकता है। आशाओं का दीप जला सकता है।
- आज की शिक्षा प्रणाली की मर्यादा (कमी) बताते हुए भारत के सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् स्व. गर्वनर श्रीप्रकाश जी ने कहा था—

  "आज की युवा पीढ़ी के लिए देश या शिक्षा के पास कोई प्रेरणादायी ध्येय नहीं है। इसलिए आज की पीढ़ी हताश और दिशाविहिन है। 1947 के पहले महात्मा गाँधी जी ने समूचे देश को आजादी का ध्येय दिया था और साथ-साथ वे राहबर भी बने थे। आज कोई मूल्यवान नेतृत्व नहीं है"।
- अगर कहीं आशा की चिनगारी नज़र आती है तो वह कार्य विद्यालय/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में हो सकता है उन्हें जगाने की आवश्यकता है। उनकी क्षमताओं को उजागर करने से ही हम जीवन मूल्यों को फिर से उत्थान की ओर ले जा पाएगें।
- वर्तमान शिक्षा में आध्यात्मिक और मूल्य शिक्षा की अनुपस्थिति की यही विलुप्त कड़ी है। कविवर रविंद्रनाथ टेगौर ने लिखा है—

  "को लेईबो मोर कार्य, कहे सांध्य रवि,
  सुनिया जगत रहे, निरुत्तर छवि,
  माटिर प्रदीप छिलो, से काहिबो स्वामी,
  आमार जेटुकु साध्य, कोरिबो ता आमि"।

जगत को प्रकाश देने का कार्य कौन करेगा? सारा जग सुनकर निरुत्तर रह जाता है। किसी झोंपड़ी में से मिट्टी का कोई दीपक बोल उठा—

"हे स्वामी, मुझ से जितना हो सकेगा, मैं आपका कार्य करूँगा"।

उपसंहार

साम्प्रत समय शिक्षा क्षेत्र में मूल्य शिक्षा की महती आवश्यकता है। समय तीव्र गति के साथ मानव की भौतिक जगत् की उड़ान ऊँचाइयाँ छू रही हैं, परन्तु उनकी आन्तरिक शक्तियाँ विस्मृत के गर्भ में जा रही हैं। अत: आज का मानव परवश है एवं दिशाशून्य बनता जा रहा है बाह्य व्यक्तित्वबोध एवं भौतिक विकास के आन्तरिक शक्तियों के विषय में उसकी सोच और खोज कुंठित होती जा रही है।

वर्तमान शिक्षा भौतिक विकास एवं धनोपार्जन पर मुख्य रूप से केंद्रित है एवं इसके कारण ही समाज में इन दिनों मानवीय मूल्यों एवं नैतिक मूल्यों का सर्वत्र पतन दिखाई दे रहा है। इसके परिणामस्वरूप यह अवधारणा प्रचलित हो रही है कि मानवीय व नैतिक मूल्यों की शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है। किन्तु मूल्य एवं आध्यार्तमिक शिक्षा हमारे व्यक्तित्व को सुदृढ़ बनाती है। मूल्यों की शिक्षा को जब पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया जाता है तब एक विशिष्ट आदर्श व मूल्यसंपन्न नागरिक जीवन निर्माण करने का मार्ग प्रशक्त हो जाता है एवं यह सर्वथा उपयुक्त ही है। क्योंकि शिक्षण काल में ही छात्र हर प्रकार की शिक्षा सीखकर जीवन बनाने की दिशा प्राप्त कर लेता है। पुनश्च आध्यात्मिक ज्ञान से भौतिक शिक्षा की परिसीमा एवं परिणाम सर्वदा न्यायोचित व सुखकर हो जाता है तथा एक वैश्विक दृष्टिकोण की प्राप्ति हो जाती है।

सामान्यतया ऐसा सोचा जाता है कि मूल्य शिक्षा की आवश्यकता मात्र बच्चों को ही है। परन्तु भौतिकवाद एवं अहम् की भावना युवाओं में नकारात्मक प्रवृत्तियों को जन्म दे रही है। इसलिए युवाओं को विशेषतः जो विद्यालय/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं अनिवार्य/वैकल्पिक रूप से मूल्य शिक्षा दिए जाने की सख्त आवश्यकता है। शिक्षकों को भी अपने आदर्श व्यक्तित्व को निखारने का यही सशक्त माध्यम या साधन है। नेतृत्व आत्मसंयम, मूल्य एवं आध्यात्मिकता की शिक्षा के प्रति रुचि उत्पन्न करना, नैतिक व आध्यात्मिक सुधार के उदाहरण प्रस्तुत करना आज की आवश्यकता है। मूल्य शिक्षा से आज के छात्रों तथा शिक्षकों को व्यसनों से होने वाली हानियों को प्रभावशाली ढंग से बताया जा सकता है तथा तनावपूर्ण होते हुए भी उसके प्रभाव से मुक्त जीवन व्यतीत करना भी सिखाया जा सकता है।

अतः छात्रों को मूल्यनिष्ठ जीवन से संबंधित अपने शिक्षकों से मार्गदर्शन प्राप्त हों तो वे स्वयं एक सम्माजनक स्थिति को अंगीकार कर अध्ययन या अन्य उपयोगी कार्य करना पसंद करेंगें। विश्व की सारी समस्याएँ तब समाप्त हो सकती हैं जब हम व्यक्तिगत स्तर पर सुधारने की कोशिश करेंगे क्योंकि विश्व की सभी समस्याएँ व्यक्तिगत समस्याओं का ही एक वृहद् आकार है। इसी उद्देश्य को चरितार्थ करने हेतु मूल्य शिक्षा व अध्यात्म को छात्रों व शिक्षकों के समक्ष उपस्थापित करना सर्वथा श्रेयस्कर सिद्ध होगा।